Multidisciplinary Journal of Shri Trilochan Upreti Smriti Shodh Sansthan DOI :
Volume (1) Issue 1, 2026, Jan-jun 2026

उत्तराखण्ड में विद्यालयी शिक्षा में इतिहास की त्रुटिपूर्ण व्याख्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(डॉ. शिवचन्द सिंह रावत) असिस्टेंट प्रोफेसर
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोपेश्वर, चमोली

सारांश–संभवत: भारत का इतिहास ही विश्व में एकमात्र ऐसा इतिहास है, जिसे आक्रांताओं ने अपने अनुसार तोड़-मरोड़कर लिखा और औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रसित भारतीयों ने इसे न केवल ज्यों का त्यों स्वीकार किया, बल्कि उनसे बढ़कर इसे और भी विकृत कर दिया। इससे लगता है कि भारत में अग्रेजों से भी बढ़कर उनकी बौद्धिक संतानें सिद्ध हुई हैं, जिन्होंने अंग्रेजी दृष्टिकोण को न केवल आगे बढ़ाया, बल्कि अपने को अंग्रेजों से भी बड़ा अंग्रेज सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उत्तराखण्ड राज्य की विद्यालयी faer, के लिए सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत इतिहास की कक्षा 6, 7 तथा 8 की पाठ्य पुस्तकों से यह बात सत्य सिद्ध होती है। इन पाठ्य पुस्तकों में किस तरह इतिहास को प्रस्तुत किया गया है, इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में हम शारीरिक रूप से तो स्वतंत्र हो गये हैं, किन्तु मानसिक रूप से हम अब भी गुलाम हैं।

मुख्य बिन्दु – औपनिवेशिक मानसिकता, गणराज्य, यूरोपीय दृष्टिकोण, भारतीयता। इसे बिडंबना ही कहा जायेगा कि उत्तराखण्ड राज्य हेतु विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत प्रकाशित इतिहास विषय की पाठ्य पुस्तकों में इतिहास को जिस तरह से लिखा गया है, उससे स्पष्ट होता है कि किस प्रकार भावी पीढ़ी के समक्ष इतिहास के तथ्यों को तोड़-मरोड़कर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इन पाठ्य पुस्तकों में कई प्रकार की विसंगतियाँ हैं। 2006 से इन पुस्तकों में आज भी ये त्रुटियाँ ज्यों की त्यों हैं। इन त्रुटियों को आज तक भी नहीं किया गया है। इस प्रकार किया गया त्रुटिपूर्ण इतिहास लेखन तथा कक्षावार पुस्तकों में की गयी विसंगतियाँ और उनका विश्लेषण इस प्रकार है-पाठ्यक्रम निर्माण समिति

त्रुटियाँ पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति में एक भी सदस्य उत्तराखण्ड से सम्बन्धित नहीं हैं। सर्वप्रथम में तीन कक्षाओं (कक्षा 6, 7 एवं 8) की पाठ्य पुस्तक के शीर्षक ही त्रुटिपूर्ण हैं। कक्षा 6 तथा 8 की पाठ्य पुस्तक का शीर्षक 'हमारे अतीत' है तो कक्षा 7 की पाठ्य पुस्तक का शीर्षक 'हमारा अतीत' है। इन पाठ्य पुस्तकों में कई वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ 2007 से अभी तक ज्यों की त्यों चली आ रही हैं। कक्षा 6 की

lEdVer2 ;fn y'kS[kf.kd ,oa ikB;iqLrdsa@ irB¸;iqLrd

लिखा गया है, जबकि प्राक्कथन में पाठ्य पुस्तक लिखा गया है। स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि सही क्या है? इसी प्रकार 'विशय' को 'विषय' लिखा गया है जो कि त्रुटिपूर्ण है। 'नीलाद्री' सही है या 'नीलाद्रि' स्पष्ट नहीं है।

भारतीयता की उपेक्षा–

कक्षा 6 की पुस्तक में पृ. 4 पर 'देश के नाम' उपशीर्षक में भारत देश के लिए इण्डिया शब्द का प्रयोग और उसकी विस्तृत व्याख्या पहले की गयी है तथा भारत शब्द की उत्पत्ति के संदर्भ में एक ही और वह भी भ्रामक तथ्य दिया गया है। पुस्तक में लिखा

गया है कि ''भरत नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिए किया जाता था। इस समूह का उल्लेख संस्कृत की आरंभिक (लगभग 3500 पुरानी) कृति ऋग्वेद में भी मिलता है। बाद में इसका प्रयोग देश के लिए होने लगा।''[1] यह तथ्य नितांत भ्रांति उत्पन्न करता है, जबकि भारत नाम के प्रयोग के अनेक तथ्य प्राचीन ग्रन्थों जैसे ऋग्वेद, जैन ग्रन्थ, विष्णु पुराण आदि में मिलते हैं।

कक्षा 6 की पुस्तक में पृ. 53 पर वज्जि संघ का उल्लेख भी भ्रांति उत्पन्न करता है। प्रसिद्ध इतिहासकार काज़ी प्रसाद जायसवाल अपने शोध में यह सिद्ध कर चुके हैं कि भारत में सोलह महाजनपदों में दो महाजनपद गणराज्य थे- वज्जि और मल्ल, किन्तु वज्जि संघ का उल्लेख त्रुटिपूर्ण ढंग से किया गया है। लिखा है कि ''गण या संघ में कई शासक होते थे। कभी-कभी लोग एक साथ शासन करते थे, जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। ये सभी राजा विभिन्न अनुष्ठानों को एक साथ संपन्न करते थे।''[2] इस प्रकार उल्लेख किया गया है कि जिससे गणराज्य की अवधारणा स्पष्ट नहीं होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये गण या संघ भी एक प्रकार से राजतंत्र ही थे, जबकि इनकी शासन प्रणाली राजतंत्र से पूर्णतया भिन्न थी। इसी प्रकार कक्षा 8 की पुस्तक में पृ. 110 पर 'राष्ट्रवाद का उदय'[3] उपशीर्षक में राष्ट्रवाद के उदय को यूरोपीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जबकि भारतीय दृष्टिकोण से भारत में राष्ट्रवाद प्राचीन काल से व्याप्त रहा है। की भारतीय अवधारणा अत्यंत प्राचीन है। विष्णु पुराण में राष्ट्र और भारत की अवधारणा स्पष्ट है।

इतिहास लेखन में उत्तराखण्ड राज्य की उपेक्षा तीनों कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में कहीं भी उत्तराखण्ड के इतिहास के बारे में किसी भी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया है, जबकि विभिन्न संदर्भों में तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि प्रदेशों से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया गया है। कहने का अर्थ है कि इन प्रदेशों के ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ उत्तराखण्ड के ऐतिहासिक तथ्यों का भी उल्लेख किया जा सकता था। जैसे- पुरास्थलों से प्राप्त शैलचित्रों के संदर्भ में पृ. 14 पर मध्य प्रदेश में स्थित भीमबेतका के चित्रों के साथ-साथ उत्तराखण्ड में स्थित गोरख्या उड्यार तथा लाखु उड्यार के शैलचित्रों का उल्लेख किया जा सकता था।

कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक में पृ. 7 पर 'तिथियों का मतलब' नामक उपशीर्षक में ईसवी सन् के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है, इसके साथ ही उत्तराखण्ड में प्रचलित विक्रमी की भी जानकारी दी जा सकती थी। क्योंकि उत्तराखण्ड में आज भी दैनिक जीवन में जन्म कुण्डली, धार्मिक कार्य, कृषि कार्य आदि में विक्रमी का प्रयोग होता है।

कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक में पृ. 80 पर उपशीर्षक 'गाँवों में कौन रहते थे?'' के अंतर्गत तमिल क्षेत्र के कृषकों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-''तमिल क्षेत्र में बड़े भूस्वामियों को वेल्लला, साधारण हलवाहों को उणवार और भूमिहीन मजदूर, दास कडैसियार और अदिमई कहलाते थे।[4] इसके साथ-साथ या इसके स्थान पर उत्तराखण्ड में पूर्व में प्रचलित कृषक वर्गों में बड़े भूस्वामियों को थातवान या मौरूसीदार, छोटे कृषकों को जो कि थातवान या मौरूसीदार की भूमि जोतते थे खैकर, अन्य प्रकार के

भूमिहीन कृषकों को कैणी या खुर्नी का भी उल्लेख किया जा सकता था।

कक्षा 6 की पुस्तक में दिल्ली में स्थित मेहरौली के लौह स्तम्भ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व को समुचित ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है। स्पष्ट है कि इसी लौह स्तम्भ से प्रचलित आख्यान के आधार पर दिल्ली का नाम दिल्ली पड़ा है, किन्तु इस बात को स्पष्ट नहीं किया गया है। साथ ही इस लौह स्तम्भ का सम्बन्ध राहुल सांकृत्यायन के अनुसार गढ़वाल से भी है। राहुल सांकृत्यायन अपने ग्रन्थ 'हिमालय परिचय (1), गढ़वाल खण्ड के पृ. 23 पर उल्लेख करते हैं कि इस लौह स्तम्भ का निर्माण गढ़वाल के लोहे से यहाँ के अगरिया लोगों द्वारा किया गया है।[5] यदि इस तथ्य का भी उल्लेख किया जाता तो इससे उत्तराखण्ड के गौरवशाली अतीत का भी ज्ञान हो जाता।

कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 18 पर 'चार सौ कर' नामक उपशीर्षक में तमिलनाडु में शासन करने वाले चोल वंश के अभिलेखों में विभिन्न किस्म के करों के लिए 400 से ज्यादा सूचक शब्द मिलते हैं।''[6] इस कथन के साथ-साथ उत्तराखण्ड में प्रचलित करों के संदर्भ में 36 रकम और बत्तीस कलम का भी उल्लेख किया जा सकता था। कुमाऊँ में चंद राजाओं के शासन काल में बद्रीदत्त पाण्डे लिखते हैं कि ''चंद राजाओं के समय में 36 किस्म के राजकर होते थे, जिनको थातवान राजकोष में जमा करते थे।''[7]

कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 19 पर ताम्रपत्रों के बारे में उल्लेख करते हुए तमिल और संस्कृत के ताम्रपत्रों का उल्लेख किया गया है, इसके साथ-साथ उत्तराखण्ड में 'तालेश्वर ताम्रपत्र' तथा 'पाण्डुकेश्वर ताम्रपत्रों' का भी उल्लेख किया जा सकता था, जिससे उत्तराखण्ड के इतिहास के बारे में छात्रों की जिज्ञासा बनती, किन्तु ऐसा नहीं किया गया।

धार्मिक दृष्टि से अन्य धर्मों की तुलना में हिन्दू धर्म के प्रति उपेक्षापूर्ण दृश्टिकोण कक्षा 6 की पुस्तक में पृ. 100 तथा 101 पर हिन्दू धर्म के बारे में मात्र चार पंक्तियाँ लिखी गयी हैं जबकि ईसाई धर्म के बारे में 18 पंक्तियों में (बॉक्स में) उल्लेख किया गया है,[8] जो कि एक प्रकार से हिन्दू धर्म के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण को ही व्यक्त करता है।

धार्मिक तथ्यों का त्रुटिपूर्ण प्रस्तुतिकरण कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 12 पर लिखा है कि ''हिन्दू धर्म की ही भाँति इस्लाम के अनुयायी भी अपने धर्म की अलग-अलग तरह से व्याख्या करते थे।''[9] यह कथन अपने आप में हिन्दू धर्म के प्रति भ्राँति उत्पन्न करता है। हिन्दू धर्म की व्याख्या और इस्लाम की व्याख्या में मूलभूत अंतर है। ऐसा लगता है कि जैसे कि एक प्रकार से इस्लाम को हिन्दू धर्म के आधार पर तुलना करने का प्रयास किया गया हो।

नायकों की उपेक्षा और धार्मिक तुष्टिकरण कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 33 पर उल्लिखित रूद्रम्मा और रजिया की तुलना करके ऐसा लगता है कि जैसे रूद्रम्मा के महत्त्व को कम करने का प्रयास किया गया है। राणा सांगा और राणा प्रताप के बारे में उल्लेख न किया जाना एक प्रकार से भारतीयता और राष्ट्रीयता को नकारना जैसा है। कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 149 पर मराठा राज्य के बारे में लिखा गया है, किन्तु ज़िवाजी के बारे में तीन-चार पंक्तियाँ ही लिखी गयी हैं, जबकि कई अन्य बिन्दुओं और व्यक्तियों के बारे में बॉक्स में पर्याप्त जानकारी दी गयी है। कक्षा 8 की पुस्तक में पृ. 16, 17 पर तथा इसी पुस्तक में पृ. 74 पर टीपू के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है, किन्तु वहीं ज़िवाजी की

अवहेलना की गयी है। कक्षा-7 और 8 की पुस्तक में कहीं भी शिवाजी का परिचय तक नहीं दिया गया है। टीपू की कहानियाँ, टीपू की तलवार, टीपू सुल्तान-शेर ए मैसूर कहकर उसे महिमामंडित किया गया है। कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 46 पर 'मुगल कौन थे', नामक उपशीर्षक में लिखा गया है कि ''मुगल दो महान शासक वंशों के वंशज थे। ..... इसमें आगे लिखा गया है कि ''परन्तु मुगल अपने को मुगल या मंगोल कहलवाना पसंद नहीं करते थे। ऐसा इसलिए था, क्योंकि चंगेज खान से जुड़ी स्मृतियाँ सैकड़ों व्यक्तियों के नरसंहार से सम्बन्धित थी। यही स्मृतियाँ मुगलों के प्रतियोगियों उजबेगों से भी संबधित थी। दूसरी तरफ मुगल तैमूर के वंशज होने पर गर्व का अनुभव करते थे, ज्यादा इसलिए क्योंकि उनके इस महान पूर्वज ने 1398 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।'' इस विवरण में स्पष्टतया चंगेज खान को नरसंहार के लिए जिम्मेदार माना गया है, परन्तु फिर भी उसे महान कहा गया है, वहीं तैमूर, जिसने दिल्ली में कत्ले-आम कर दिया था, उसे भी महान कहना कैसे उचित है?

तथ्यों की त्रुटिपूर्ण व्याख्या-कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 66 पर उपशीर्षक 'मंदिरों पर निशाना क्यों?' के अंतर्गत पाण्ड्य राजा श्रीमर श्रीवल्लभ के श्रीलंका पर आक्रमण का उल्लेख किया गया है और लिखा है कि ''सारी बहुमूल्य चीजें वह ले गया।..... रत्न महल में रखी स्वर्ण की बनी बुद्ध की मूर्ति.... और विभिन्न मठों में रखी सोने की प्रतिमाओं.... इन सभी को उसने जब्त कर लिया।'' सिंहली शासक के आत्माभिमान को इससे जो आघात लगा था, उसका बदला लिया जाना स्वाभाविक था। अगले सिंहली शासक सेन द्वितीय ने अपने सेनापति को, पाण्ड्यों की राजधानी मदुरई पर आक्रमण करने का आदेज़ दिया। बौद्ध इतिहासकार ने लिखा है कि इस अभियान में बुद्ध की स्वर्ण मूर्ति को ढूँढ निकालने तथा वापस लाने हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किये गये। इसी प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में जब चोल राजा राजेन्द्र प्रथम ने अपनी राजधानी में शिव मंदिर का निर्माण करवाया था तो उसने पराजित शासकों से जब्त की गयी उत्कृष्ट प्रतिमाओं से इसे भर दिया। ... अगले पैराग्राफ में उल्लेख किया गया है कि ''गजनी का सुल्तान महमूद राजेन्द्र प्रथम का समकालीन था। भारत में अपने अभियानों के दौरान उसने पराजित राजाओं के मंदिरों को अपवित्र किया तथा उनके धन और मूर्तियों को लूट लिया। उस समय सुल्तान महमूद कोई महत्त्वपूर्ण शासक नहीं था, लेकिन मंदिरों को नष्ट करके खास तौर से सोमनाथ का मंदिर-उसने एक महान इस्लामी योद्धा के रूप में श्रेय प्राप्त करने का प्रयास किया। मध्ययुगीन राजनीतिक संस्कृति में शासक अपने राजनैतिक बल व सैनिक का प्रदर्शन पराजित शासकों के उपासना स्थलों पर आक्रमण करके और उन्हें लूट कर करते थे।'' इस विवरण में गजनी के आक्रमणों को और उसके द्वारा मंदिरों को नष्ट करने और मूर्तियों को तोड़ने को मध्यकालीन राजनीतिक संस्कृति कहकर उचित ठहराने का प्रयास किया गया है, जो कि विद्रुप मानसिकता को दर्शाता है। इसके लिए पाण्ड्य और चोल राजाओं के उदाहरण देकर उचित ठहराने का प्रयास किया गया है, जो कि सर्वथा अनुचित है। यह स्पष्ट है कि पाण्ड्य और चोल राजाओं ने मंदिरों से मूर्तियों को लूटकर अपने यहाँ उन्हें स्थापित किया, जबकि गजनवी ने मूर्तियों और मंदिरों को तोड़ कर कर दिया था। इस प्रकार के Narrative किसी भी

दशा में उचित नहीं कहे जा सकते हैं।

इसी प्रकार कक्षा 7 की पुस्तक में ही पृ. 3 तथा 4 पर विदेशी शब्द की जो व्याख्या दी गयी है, वह स्पष्ट नहीं है, बल्कि किसी विशेष प्रयोजन से की गयी प्रतीत होती है। विदेशी शब्द के बारे में लिखा है कि ''किसी भी शब्द का प्रयोग करने में इतिहासकारों को बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि अतीत में उन शब्दों के कुछ अलग ही अर्थ थे। उदाहरण के लिए 'विदेशी' जैसा सीधा-सादा शब्द ही ले लीजिए। हमारे लिए आज इसका अर्थ होता है, ऐसा व्यक्ति जो भारतीय न हो। मध्ययुग में, किसी गाँव में आने वाला कोई भी अनजाना व्यक्ति, जो उस समाज या संस्कृति का अंग न हो, विदेशी कहलाता था। (ऐसे व्यक्ति को हिन्दी में परदेसी और फारसी में अजनबी कहा जा सकता है)''[11]

कक्षा 7 की पुस्तक में पृ. 88 पर वास्कोडिगामा और कोलम्बस के बारे में बताया गया है, किन्तु यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यूरोपवासियों के लिए भारत से व्यापार क्यों जरूरी था? तथा स्थलीय व्यापार मार्ग से व्यापार क्यों नहीं हो पा रहा था? अतः तुर्कों द्वारा स्थलीय मार्ग पर नियंत्रण और यूरोप के लिए भारतीय व्यापार की महत्ता पर भी प्रकाश डाला जाना चाहिए था। इससे तत्कालीन भारत की समृद्धि और व्यापारिक महत्त्व का ज्ञान हो जाता।

औपनिवेशिक सोच को प्रोत्साहित करना– कक्षा-8 की पुस्तक में पृ. 7 पर चित्र-7 -1857 के विद्रोही, में एक चित्र दिया गया है, इस fp=r से अंग्रेजों की सोच का पता चलता है, किन्तु इस fp=r को महत्त्व देने की vra';drr नहीं थी, क्योंकि लगता है कि जैसे अंग्रेजों की सोच को महत्त्व दिया जा रहा हो। इस चित्र को- 1857 के विद्रोही, लिखा गया है,[11] जबकि इसे 1857 के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लिखा जाना चाहिए था। साथ ही पुस्तक में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को जगह-जगह पर विद्रोह लिखा गया है, जो कि अंग्रेजी सोच को प्रदर्शित करता है। अंग्रेजों के नजरिये से यह विद्रोह था, किन्तु भारतीयों के लिए स्वतंत्रता के लिए संघर्ष था।

कक्षा 8 की पुस्तक में पुस्तक के पृ. 10 पर लिखा गया है कि यूरोप के बाजारों में भारत के बने बारीक सूती कपड़े, और रेशम की जबरदस्त मांग थी। इनके अलावा काली मिर्च, लौंग, इलायची और दालचीनी की भी जबरदस्त मांग रहती थी। यूरोपीय कंपनियों के बीच इस बढ़ती प्रतिस्पर्धा से भारतीय बाजारों में इन चीजों की कीमतें बढ़ने लगी और उनसे मिलने वाला मुनाफा गिरने लगा। यहाँ पर कंपनियों के दृष्टिकोण से भारतीय वस्तुओं की कीमतों को जोड़ा गया है। यह सही है कि इससे यूरोपीय कंपनियों का मुनाफा कम हुआ होगा, किन्तु भारतीय व्यापारियों का लाभ बढ़ा होगा। इसे भी रेखांकित किया जाना चाहिए था। साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए था कि किस तरह 18वीं शताब्दी में यूरोप के साथ-साथ इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओं की मांग इतनी अधिक थी कि इंग्लैण्ड का धन निरंतर भारत आ रहा था, जिससे चिंतित होकर इंग्लैण्ड की संसद ने सन् 1720 में इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओं के प्रयोग पर जुर्माना लगा दिया था।[12]

कक्षा 8 की पुस्तक में पृ. 83 पर 'पूरब की जघन्य गलतियाँ'[13] नामक उपशीर्षक में पूरब के ज्ञान के प्रति अंग्रेजों के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है, किन्तु उपशीर्षक से यह संदेश मिलता है कि जैसे सचमुच पूरब ने जघन्य गलतियाँ की हों। यह प्रस्तुतीकरण त्रुटिपूर्ण है। इसी प्रकार पृ. 92 पर भी अंग्रेजों के

दृष्टिकोण को ही मजबूत करने का प्रयास किया गया है। बॉक्स में लिखा है कि 'सभ्य करने के लिए [illegible][14] इस से प्रथम दृष्टया ये प्रतीत होता है कि अंग्रेज भारतीयों को सभ्य बनाने के लिए शिक्षा दे रहे थे, जो कि रूदयार्ड किपलिंग जैसे अंग्रेज साम्राज्यवादी की मानसिकता को ही प्रदर्शित करता है।

उत्तराखण्ड की विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत पढ़ायी जाने वाली इस प्रकार की पाठ्य पुस्तकें किस प्रकार नन्हें बच्चों के मन में भारतीय इतिहास के प्रति त्रुटिपूर्ण धारणा बना रही हैं, यह निश्चित ही चिंतनीय है। इस तरह से पाठ्य पुस्तकों में भारतीयता की उपेक्षा, इतिहास का त्रुटिपूर्ण लेखन अवश्य ही भावी पीढ़ी को औपनिवेशिक मानसिकता से भर देता है। ऐसे में कैसे नई पीढ़ी से स्वतंत्र विचारों और राष्ट्र प्रेम की अपेक्षा की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली की अनुमति एवं सहयोग से विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक, सामाजिक विज्ञान, हमारे अतीत –1, प्रथम संस्करण 2006, पुनर्मुद्रण 2019–20, पृ0 04
2. वही, पृ0 53
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली की अनुमति एवं सहयोग से विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित कक्षा 8 की पाठ्य पुस्तक, सामाजिक विज्ञान, हमारे अतीत -III, प्रथम संस्करण 2008, पुनर्मुद्रण 2019–20, पृ0 110
4. कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक, पृ0 80
5. राहुल, सांकृत्यायन, हिमालय परिचय (खण्ड 1), गढ़वाल, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद, 1953, पृ0 23
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली की अनुमति एवं सहयोग से विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित कक्षा 7 की पाठ्य पुस्तक, सामाजिक विज्ञान, हमारा अतीत –II, प्रथम संस्करण 2007, पुनर्मुद्रण 2019–20, पृ0 18
7. बद्रीदत्त पाण्डे, कुमाऊँ का इतिहास, विनोद प्रकाश अग्रवाल, श्याम प्रकाशन, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, 1990, पृ0 369
8. पूर्वोक्त, कक्षा 6 की पाठ्य पुस्तक, पृ0 100 एवं 101
9. पूर्वोक्त, कक्षा 7 की पाठ्य पुस्तक, पृ0 12
10. वही, पृ0 03 तथा 04
11. पूर्वोक्त, कक्षा 8 की पाठ्य पुस्तक, पृ0 07
12. बी0एल0 ग्रोवर एवं यज़पाल, आधुनिक भारत का इतिहास: एक नवीन मूल्यांकन, एस0 चंद एण्ड कंपनी लि0 रामनगर, नई दिल्ली, 1995, पृ0 635
13. पूर्वोक्त, कक्षा 8 की पाठ्य पुस्तक, पृ0 83
14. वही, पृ0 92